<u>मन के स्वास्थय के लिए रूहानी भोजन जरूरी है : राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी</u>

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत) , ०७ मई । आज ज्ञान सरोवर के हार्मनी हॉल में आर ई आर एफ की भगिनी संस्था , कला संस्कृति प्रभाग द्वारा सुसंस्कृत समाज निर्माण में कलाकारों की भूमिका विषय पर एक अखिल भारतीय सम्मलेन का आयोजन किया गया। यह सम्मलेन आगामी ४ दिनों तक जारी रहेगा। इस सम्मलेन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके समपन्न हुआ. दीेप प्रज्वलन में अनेक गण्य - मान्य प्रतिभागियों ने भाग लिया।

ज्ञान सरोवर अकादमी की निदेशक राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी जी ने अपना आशीर्वचन सम्मलेन को दिया। अपने कहा कि जीवन में संतुलन की परम जरूरत है। अन्यथा जीवन हिचकोले खाता रहेगा। कार के चारो पहियों में समान दाब होना चाहिए नहीं तो कार सही नहीं चलेगी -हिचकोले खाती रहेगी। शरीर की सम्भाल के लिये हम ८ घंटे तो देते ही हैं। परन्तु हम आत्म उन्नति के लिए कितना समय देते हैं ? क्या मन ईश्वरीय याद में रहता है ? क्या मन फ़ालतू बातों में उलझा नहीं रहता ? मन को भी रूहानी ज्ञान का भोजन जरूरी है। ईश्वरीय याद की एक्सरसाइज मन को चाहिए। नहीं होने पर मन कमजोर होगा। ज्ञान रुपी शुद्ध भोजन शक्ति देगा। मन बलवान बनेगा। जैसे आप कल के लिए प्रैक्टिस करते हैं - उसी प्रकार ज्ञान और योग के अभ्यास से आप मानसिक और शारीरिक बीमारियों से दूर रहेंगे। चिंताएं दूर भाग जाएंगी। अतः योग और ज्ञान का अभ्यास जरूरी है। मन में इस ख्याल से की मैं ईश्वर की औलाद हूँ - हम उलटे पुलटे कामों से दूर रहेंगे। मन को परमात्मा से जोड़ना जरूरी है।

ब्रह्मा कुमारीज मीडिया प्रभाग के अध्यक्ष राजयोगी करुणा भाई जी ने कहा कि इस संसथान का जन्म ओम शब्द से ही हुआ है। इस संस्थान का पूर्व का नाम ओम मंडली था। हमारा एक ही लक्ष्य है कि हम दुनिया में दैवी संस्कृति की स्थापना कैसे करें ? लोगों के जीवन में १६ कला और १४ कला का प्रादुर्भाव कैसे हो ? हमारा शोध इसी विषय पर चलता है। आध्यात्मिकता की मदद से कलाकारों के संस्कार और सभी के संस्कार दैवी बनेंगे।

ब्रह्मा कुमारीज कला संस्कृति प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्मा कुमारी कुसुम बहन ने कहा कि लोग कहते हैं - चाहिए ,चाहिए ,चाहिए -ऐसा चाहिए -वैसा चाहिए। मगर ये करेगा कौन ? हमें प्रैक्टिकल में सद्गुणों को धारण करना होगा। खुद को जानकार और उस परम कलाकार को जानकार ही हम अपनी कला को पाएंगे। सबसे बड़ी कला है परमात्मा के सानिध्य में आना और अपना कर्म तथा अपनी वाणी को उदार बनाना।

मुख्य अतिथि, संत रविदास हस्त शिल्प और हथ करघा कार्पोरेशन के अध्यक्ष नारायण प्रसाद कबीरपंथी जी ने अपनी बातें इस प्रकार रखीं। आपने कहा कि किसी भी सभ्य समाज में कलाकारों की भूमिका महत्व पूर्ण है। आक्रांताओं ने सर्व प्रथम हमारी संस्कृति को समाप्त करने की कोशिश की। वे मानते थे की भारत की संस्कृति को समाप्त करने पर ही वे भारत पर विजय प्राप्त कर पाएंगे। आज भारत स्वतंत्र है। इसकी संस्कृति को कोई समाप्त नहीं कर पाया। हमारी संस्कृति सनातन है. इटरनल है। विदेशी संस्कृति को यहां प्रवेश पर रोक लगेगी। कला के माध्यम से हम

दुनिया को भारतीय संस्कृति की सौगात दे रहे हैं। कल और कलाकारों ने समय समय पर समाज को सुधारा है। ब्रह्मा कुमारीज का प्रयास सराहनीय है।

कला संस्कृति प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका ब्रह्मा कुमारी निहा बहन ने मुख्य वक्ता के रूप में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कहा कि आपमें से हरेक में परमात्मा ने कोई न कोई कला का वरदान प्रदान किया है। ये आपका सौभाग्य है। आप परमात्मा के घर तक अपनी उसी खूबी की वजह से उपस्थित हैं। हमारा भारत आज भी इसलिए टिका हुआ है क्योंकि इसकी नींव दैवी संस्कृति पर टिकी हुई है। दैवी संस्कृति मूल्यों से युक्त रही है। मगर आज के कलाकारों की क्या है स्थिति ? प्रतियोगिता के कारण वह निराश हो गया है और सम्भावना है की वह गुमराह हो सकता है। उसको आज जागने की -सँभलने की जरूरत है। आत्मिक बल जगा कर कलाकार समाज के लिए एक दीपक बन सकता है। आत्मिक बल का अर्थ है - अनेक सकारात्मक बल। राजयोग के अभ्यास से हमारे आत्मिक बल प्रकट होने लगते हैं। ये हमें सफलता के मार्ग पर ले चलते हैं। राजयोग का अभ्यास हमें परमात्मा का साथी बना देता है। यह साथ अनूठा है और उत्पादक है।

राजा मानसिंह तोमर संगीत और कला विश्व विद्यालय की कुलपति , बहन प्रोफेसर डॉक्टर स्वतंत्र शर्मा जी ने अपने उदगार इस प्रकार प्रकट किये। सबसे पहले आपने आज के सत्र में प्रस्तुत स्वागत गीत और स्वागत नृत्य की प्रसंशा की और कहा की यह अद्भुत था। तत्पश्चात अपने कहा कि सभी विधाओं के कलाकार एक समान सम्माननीय हैं। कला पूर्व में मात्र मनोरंजन का साधन मानी जाती थी। मगर आज कला ने अकादमिक स्वरुप ग्रहण कर लिया है और विद्यालयों तथा महा विद्यालयों में इनकी विधि पूर्वक शिक्षा दी जाती है। ये व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं। आज के महान कलाकारों का जीवन मूल्यों से पूरित है और उनका चेहरा दैदीप्य मान होता रहता है। ये सभी लोग एक प्रकार से आध्यात्म के काफी करीब हैं। इस बल के कारण ही वे अनेक लोगों तथा परमात्मा का सामीप्य प्राप्त कर लेते हैं। अपनी कला की प्रस्तुति के पूर्व वे उपयुक्त राग का ध्यान करते हैं। ध्यानाभ्यास का प्रारम्भ ऐसे ही हुआ हैदुनिया में. कलाकार गम्भीर रूप से योगी होते ही हैं।

मराठी फिल्मों के निर्माता , निदेशक , लेखक सारंग जगताप जी ने आज के अवसर पर अपने उदगार इस प्रकार प्रकट किये। आपने कहा कि मैं आज खुद को काफी गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ क्योंकि इस दिव्य भूमि पर मुझे आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। सम्मलेन के आयोजकों को दिल से अपना आभार दे रहा हूँ। दुनिया को एक सूत्र में बाँधने वाला विचार है वसुधैव कुटुंबकम। ब्रह्मा कुमारीज अनेक वर्षों से इसी विचार धारा को लेकर चल रही हैं। मैं आज यहां पूरी तरह आश्वस्त हूँ की आध्यात्म और कला के बल पर ही अनेकता को खत्म किया जा सकता है। ब्रह्मा कुमारीज ऐसे ही प्रयत्न में लगी हैं। कलाकारों के जीवन का गहरा प्रभाव लोगों के जीवन पर पड़ता है। कलाकार रोल मॉडल हैं। उनको सुसंस्कार अपनाना ही होगा। आध्यात्म के मार्ग से ही उनकी अपनी व्यक्तिगत जिंदगी निखरेगी और वे समाज के लिए भी एक सुन्दर संदेश दे पाएंगे।

फिल्म और टी वी कलाकार बहन गीतांजलि वसंत राव ने कहा की हम सभी कलाकार हैं। आप सभी व्यावहारिक जीवन के कलाकार हो और मैं टी वी की कलाकार हूँ। मैं सही वक़्त पर यहां आई हूँ। यहां स्वर्ग स्थापित है। मेरा सारा तनाव यहां समाप्त हुआ है - होता है। फ़िल्मी दुनिया के अनेक कलाकार यहां आये हैं -रति अग्निहोत्री यहां आईं - वे अभिभूत हो गईं। मैं सभी को कहती हूँ की मन की शांति के लिए आप ब्रह्मा कुमारीज के संपर्क में आइए। यहां आपका जीवन बदल जायेगा -शांति के मार्ग पर चल पड़ेगा। इनसे जुड़ कर मैं खुद को खुश नसीब मानती हूँ।

ब्रह्मा कुमारी उर्मिला बहन ने योगाभ्यास करवाया। कार्य क्रम का संचालन करनाल की ब्रह्मा कुमारी प्रेम बहन ने किया जो कला संस्कृति प्रभाग की क्षेत्रीय संयोजिका हैं। कला संस्कृति प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्रह्माकुमार सतीश भाई ने आभार प्रकट किया। (रपट : बी के गिरीश, मीडिया विंग, ज्ञान सरोवर)